रविवारीय

सावित्रीबाई फुले की विरासत

शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण

सावित्री ठाकुर
केंद्रीय महिला एवं बाल मंत्री

शिक्षक दिवस केवल उन गुरुओं को सम्मानित करने का दिन नहीं है जिन्होंने अपने ज्ञान और मार्गदर्शन से लाखों जीवन संवार दिए, बल्कि यह अवसर उन महान विभूतियों को भी स्मरण करने का है जिन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का हथियार बनाया. भारत की प्रथम महिला शिक्षिका और समाज सुधारक सावित्रीबाई फुले (1831-1897) ऐसी ही हस्ती थीं. उन्होंने ऐसे दौर में महिलाओं की शिक्षा का बीड़ा उठाया, जब समाज का बड़ा वर्ग इसे नापसंद करता था और विरोध स्वरूप हिंसा तक पर उतर आता था.

सावित्रीबाई फुले-साहस की मिसाल

1848 में सावित्रीबाई फुले ने अपने पति महात्मा ज्योतिबा फुले के साथ पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला. वह केवल शिक्षिका ही नहीं थीं, बल्कि पाठ्यक्रम तैयार करने और छात्राओं को प्रेरित करने का भी काम करती थीं. समाज का विरोध इतना तीव्र था कि रोज़ाना उन पर कीचड़ और पत्थर फेंके जाते, इसलिए वह अतिरिक्त साड़ी लेकर घर से निकलती थीं. लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी, क्योंकि उनका विश्वास था कि भारत का भविष्य उसकी बेटियों की शिक्षा में ही निहित है.

सुधारकों की परंपरा और समानता का आह्वान

सावित्रीबाई का संघर्ष भारतीय समाज सुधार आंदोलन की धारा से जुड़ा था. राजा राममोहन राय ने सती प्रथा और बाल विवाह के खिलाफ आवाज़ उठाई और महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया.

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह और बालिका शिक्षा का समर्थन किया. आगे चलकर महात्मा गांधी ने भी स्पष्ट कहा कि महिलाओं की शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली माध्यम है.

इन सुधारकों का मानना था कि जब तक महिलाएँ शिक्षित और सशक्त नहीं होंगी, तब तक भारत सच्चे अर्थों में स्वतंत्र और विकसित नहीं हो सकता.

स्वतंत्र भारत और महिला शिक्षा की प्रगति

आजादी के बाद से महिला शिक्षा में उल्लेखनीय प्रगति हुई. 1951 में महिला साक्षरता केवल 8.86त्न थी, जो 2011 की जनगणना तक बढ़कर 65.46त्न हो गई. हाल के वर्षों में यह आँकड़ा और बेहतर हुआ है. सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों ने इसमें अहम भूमिका निभाई.

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' (2015) अभियान ने समाज की सोच बदली और स्कूलों में लड़कियों का नामांकन बढ़ाया. पोषण अभियान, मिशन शक्ति और सामर्थ्य जैसी योजनाओं ने शिक्षा को पोषण, सुरक्षा और अवसरों से जोड़ा. यूडीआईएसई+ 2024-25 के अनुसार, पहली बार महिला शिक्षकों की संख्या कुल का 54.2त्न हो गई है, जो 2014-15 के 46.9त्न से कहीं अधिक है.

महिलाओं और बाल विकास मंत्रालय ने भी ऐतिहासिक कदम उठाते हुए राष्ट्रीय जनसहयोग एवं बाल विकास संस्थान का नाम बदलकर सावित्रीबाई फुले राष्ट्रीय महिला एवं बाल विकास संस्थान कर दिया है. यह संस्थान प्रशिक्षण और अनुसंधान के जरिए महिलाओं और बच्चों के कार्यक्रमों को मजबूत बना रहा है.

चुनौतियाँ अब भी मौजूद

- प्रगति के बावजूद कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं—
- कम उम्र में विवाह और घरेलू जिम्मेदारियाँ
- लड़कियों की सुरक्षा से जुड़ी चिंताएँ
- आर्थिक कारणों से माध्यमिक स्तर पर पढ़ाई छोड़ना

इन्हें दूर करने के लिए सरकार छात्रवृत्ति, आवासीय विद्यालय, मासिक धर्म स्वच्छता कार्यक्रम और डिजिटल शिक्षा की पहल कर रही है, ताकि हर लड़की बिना रुकावट अपनी शिक्षा पूरी कर सके.

महिला शिक्षकों की भूमिका

महिला शिक्षक केवल पढ़ाने का कार्य नहीं करतीं, बल्कि वे लाखों बालिकाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनती हैं. अध्ययनों से पता चला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षकों की उपस्थिति से लड़कियों का स्कूल में नामांकन और पढ़ाई जारी रखने की संभावना बढ़ जाती है. इस प्रकार वे सावित्रीबाई फुले की मशाल को आगे बढ़ा रही हैं.

विकसित भारत की ओर

भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है. इसमें महिलाओं की शिक्षा की भूमिका निर्णायक है. शिक्षित महिलाएँ बेहतर स्वास्थ्य, कम शिशु मृत्यु दर और उच्च पारिवारिक आय सुनिश्चित करती हैं. यूनेस्को के अनुसार, किसी लड़की की स्कूली शिक्षा का हर अतिरिक्त वर्ष उसकी आय में 10-20त्न की वृद्धि करता है. यही कारण है कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय अपनी योजनाओं को सतत विकास लक्ष्य-4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) और सतत विकास लक्ष्य-5 (लैंगिक समानता) के अनुरूप चला रहा है.

सावित्रीबाई फुले की विरासत केवल इतिहास की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रकाश स्तंभ है. उनका साहस हमें यह दिखाता है कि भारत का विकास तभी संभव है जब उसकी बेटियाँ और बेटे समान रूप से नेतृत्व करें.

सामूहिक संकल्प

सावित्रीबाई फुले की कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्ची प्रगति साहस और दृढ़ता से जन्म लेती है. पुणे के उनके साधारण स्कूल से लेकर आज की उन कक्षाओं तक, जहाँ करोड़ों बेटियाँ प्रतिदिन पढ़ाई कर रही हैं, यह यात्रा भारतीय समाज की सोच में आए बदलाव की गवाही देती है. शिक्षक दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि महिला सशक्तिकरण केवल कल्याण का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय शक्ति का आधार है. जब हर लड़की शिक्षित होगी, हर महिला सशक्त होगी और हर शिक्षक का सम्मान होगा, तभी भारत अपने सपनों का विकसित राष्ट्र बन सकेगा.

व्यंग्य

फंस गओ नेता बोतल में ....!

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

जमाने से हम यह सुनते आ रहे हैं कि धनुष से निकला तीर, जुबान से निकली बात और बंदूक से निकली गोली लौट कर कभी वापस नहीं आती है. उसी तरह नेता द्वारा दिए गए आश्वासन और किए गए वायदे कभी भी धरती पर उतर कर नहीं आते . लेकिन क्या करें कि लोग हैं कि मानते ही नहीं. नेताओं खुद को हर विषय का एक्सपर्ट समझने की बड़ी खराब बीमारी है . इसी के चलते वे हर बार फटे में पैर डालने और हर खबर पर टीका टिप्पणी कर बैठते हैं. इसी को कहते है आ बैल मुझे मार . इसकी वजह होती है नेता जी की रोज ब रोज अपना चेहरा अखबार और टीवी में देखने की ललक . इससे पता चलता है कि नेताजी हमारे बीच ही एक्टिव हैं . काम भले कोड़ी भर का न हो मीडिया में मुखड़ा दिखते रहना चाहिए,बस.

हाल ही में नेताजी ने किसी रिपोर्ट को पढ़ने के बाद मध्यप्रदेश की महिलाओं के बारे में यह कह कर धमाका कर दिया कि मध्यप्रदेश की महिलाएं देश में सबसे ज्यादा शराब पीतीं हैं. फिर क्या, बस हो गया हंगामा हो विरोधी पक्ष के नेता अपने बयानों की कापियां ले-ले कर अखबारों के दफ्तर में जा धमके. यह महिलाओं की इज्ज़त पर हमला है. नेताजी माफी मांगे और इस्तीफा दें . विरोधी पक्ष के नेताओं को अपनी ही कौम के बारे में यह पता नहीं होता है कि वे कितने ढीठ होते हैं, और नेता कभी इस्तीफा देने के लिए बना ही नहीं हैं.

कहते हैं कि नेता को मुंह खोलने से पहले यह सोच विचार कर लेना चाहिए कि उनकी बात का आगे जा कर क्या असर होगा. मध्यप्रदेश की महिलाओं को शराबखोर बताने के बाद हंगामा तो होना ही था और वह हुआ भी.रिएक्शन देख कर नेताजी के तोते उड़ गए. वे समझ गए कि अब कपड़े फटने की नोबत आएगी. उनका गुरुर तत्काल रफूचक्कर हो गया. उन्होंने तुरंत पलटी मारते हुए अपने झकाझक कुरते की तरह ही सफेद झूठ बोलते हुए कहा कि मैंने ऐसा कभी नहीं कहा. मेरे लिए तो सभी महिलाएं पूज्यनीय है. विश्वास न हो तो मेरे घर में जा कर पूछ लो. वैसे भी इस प्रदेश को हृदय प्रदेश कहा जाता है . यहां कि महिलाएं जब किसी को प्रेम करतीं हैं पूरे दिल से करतीं हैं, और बदला लेतीं हैं तो रणचण्डी बन जातीं हैं. बेलन और झाड़ू उनका अचूक हथियार है. इन्हीं दिलवाली दिल्ली की महिलाओं को प्रसन्न करने के लिए एक नेताजी ने झाड़ू को अपनी पार्टी के ध्वज में स्थान देकर उसे वोट के लिए अपना हथियार बना लिया था.

बेचारे अपने नेताजी को यह भी डर सता रहा था कि उन्होंने अपनी वाचालता के चलते महिलाओं से पंगा तो ले लिया था पर जब होश में आने पर सोचा (वैसे नेताओं में सोचने और सोच कर करने की शक्ति क्षीण ही होती है.) कि कहीं ऐसा न हो कि प्रदेश की महिलाएं उन्हें जिन्न की तरह बोतल में न बंद कर दें. तब उन्होंने नेताओं के अचूक हथियार, झूठ का सहारा ले कर कहा मैंने तो वैसा कहा ही नहीं है. मीडिया की खबरें, न्यूज चैनलों के वीडियो सब झूठे हैं. मैं तो औरतों की बहुत इज्जत करता हूं. यह कहा जाता है कि इस धरा पर सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र के बाद यदि कोई सत्यवादी हैं ,तो वह नेता ही हैं, उन्होंने ही सत्य को थाम रखा है. वरना यह धरा तो रसातल को चली जाती.

ऐसा लगता है कि नेताजी ने जब यह ख़बर पड़ी होगी या किसी ने सुनाई होगी तो उस समय वे रिलेक्स मूड में शायद अपने साथियों के साथ एन्जॉय कर रहे होंगे. उसी मूड में उनको लगा कि अरे महिलाएं सबसे ज्यादा पी रहीं हैं, फिर तो वो जल्दी ही खुट जाएगी तब हमारा क्या होगा, हमारे लिए क्या बचेगा ? शायद अनजाने में नेताजी हिट विकेट हो गए. लेकिन नेताजी भी ठहरे लौह पुरुष, बंदे ने सबको झूठा बता दिया परंतु अपनी करामात की माफी नहीं मांगी. उन्होंने साबित कर दिया कि नेता की पीठ कछुए की पीठ के समान मोटी चमड़ी से बनी होती है. उस पर किसी चीज का असर नहीं होता . महिलाओं पर सबसे ज्यादा शराब पीने का आरोप लगाने से जान छुड़ाने के लिए नेता जी ने पलटी मरी और कहा कि शराब की सबसे ज्यादा खपत हमारे मध्यप्रदेश में होती इस पर रोक लगनी चाहिए. सरकार ने इसे टायगर स्टेट से शराब स्टेट बना दिया. क्या है कि नेताजी जो चिंता व्यक्त किए हैं न उससे हम भी सहमत हैं. तो हमारा सुझाव है कि उन्हें अपने सभी विधायकों से यह हलफनामा ले कर यह बताना चाहिए कि उनके कितने पार्टी पदाधिकारी, विधायक और जनप्रतिनिधि सुरा-सुंदरी का उपयोग बंद कर दिए हैं. क्योंकि चैरिटी बिगन फ्रॉम होम.

इन दिनों सारे देश के साथ मध्यप्रदेश में भी गणपति उत्सव की धूमधाम है. नेता लोग भी गणपति पंडालों का चक्कर लगा रहे. आरती कर रहे हैं, शीश झुका रहे हैं.नेताओं को गणपति जी प्रतिमा से भी सीख लेना चाहिए. गणेश जी का बड़ा सा पेट इस बात की सीख देता है कि नेताओं को कुछ बातें अपने पेट में छुपा कर रखनी चाहिए. गणेश जी के लंबे और विशाल कान इस बात के द्योतक है कि व्यक्ति को हरदम अपने कान सतर्क रखने चाहिए . जिससे उन्हें यह पता चल सके कि जनता की उनके प्रति क्या धारणा है. वैसे भी नेताओं में स्वलोकन की भावना कम होती है. चाटुकारिता और वाचालता उनके आभूषण होते हैं.

एक देश, एक टैक्स, एक दर

मोदी सरकार का अधूरा लेकिन निर्णायक कदम

राजीव खंडेलवाल
(लेखक वरिष्ठ कर सलाहकार एवं पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

मोदी सरकार द्वारा 1 जुलाई 2017 में वेट टैक्स के बदले गुड्स एवं सर्विस टैक्स एक्ट 2016 के द्वारा जीएसटी कर लागू करने के बाद जीएसटी काउंसिल की 56 वीं बैठक (3 सितंबर 2025) में टैक्स ढांचे में बड़े बदलाव का निर्णय लिया गया. अब चार दरों (5%, 12%, 18%, 28%) की जगह निम्न श्रेणी निश्चित की गई. 5% मेरिट दर . 18% स्टैंडर्ड दर, और 40% डिमैरिट दर, विलासिता और हानिकारक और वस्तुओं पर. उक्त दरें 22 सितंबर 2025 से लागू होंगी सिर्फ डिमैरिट श्रेणी में रखे गए वस्तुओं को छोड़कर जिन पर कर लगाने की तारीख बाद में अलग से सूचित की जाएगी.

राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में एक कदम और - भाजपा और संघ की मूल नीति एक देश, एक विधान, एक निशान पर आधारित है इसे सफलतापूर्वक धरातल पर उतारा भी किया है. इसी विचार को जीएसटी मैं किया गया यह सुधार भी आगे बढ़ा रहा है. भाजपा की वन नेशन के सिद्धांत को लागू करने की विभिन्न क्षेत्रों की सूची निम्न अनुसार है जिस पर वाह या तो कार्य कर चुकी है या कर रही है. जीएसटी का सरलीकरण इसी श्रृंखला का अगला कदम है.

यूपीए सरकार से एक कदम आगे -यदि हम पीछे मुड़कर देखें तो वर्ष 2006 में यूपीए सरकार ने सबसे पहले पूरे भारत में एक कर, एक दर की योजना बनाई थी. 2010 से लागू करने का प्रयास, परंतु असफल रही. वर्ष 2009 में 13 वें वित्त आयोग ने एक दर 12% (6% जीएसटी + 6% सीएसटी) का सुझाव दिया. परंतु एक देश एक की नीति और सिद्धांतों की शुरू से ही वकालत करने वाली भाजपा के शासित राज्यों के विरोध और यूपीए सरकार की अस्थिरता के कारण योजना धरातल पर उतर नहीं पाई. अंतत: 2017 में मोदी सरकार ने चार दरों वाला जीएसटी लागू किया. परंतु जीएसटी की मूल अवधारणा देने वाली कांग्रेस और उसके नेता राहुल गांधी ने तब जीएसटी को गब्बर सिंह टैक्स कहकर विरोध किया था. लेकिन आज जीएसटी काउंसिल में कांग्रेस सरकारों की सहमति के बावजूद वित्त मंत्री के द्वारा उसी गब्बर सिंह टैक्स को कम करने के निर्णय का कांग्रेस ने सार्वजनिक रूप से हार्दिक स्वागत नहीं किया है, जो की दुर्भाग्यपूर्ण है. तथापि कुछ नेताओं और विपक्ष ने इसे देर से आया सही निर्णय जरूर ठहराया.

जीएसटी काउंसिल का ऐतिहासिक निर्णय

- एक रैंक, एक पेंशन.
- एक पहचान पत्रः आधार.
- एक राशन कार्ड.
- एक पाठ्यक्रम व शिक्षा नीति.
- एक श्रम कानून .
- एक स्वास्थ्य बीमा योजना.
- एक मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड.
- एक कृषि बाजार.
- एक छात्रवृत्ति योजना.
- खेलो इंडिया योजना.
- यूनिफॉर्म सिविल कोड की पहल एवं
- एक देश, एक चुनाव की परिकल्पना.

वित्त मंत्री और जीएसटी काउंसिल का यह निर्णय स्वागत योग्य है . यह न केवल कर ढांचे को सरल करेगा, बल्कि मोदी सरकार की घोषित नीति वन नेशन, वन टैक्स की दिशा में एक मजबूत और निर्णायक कदम भी सिद्ध होगा .

आम जनता व मध्यम वर्ग को राहत- कई वस्तुएं सस्ती- एक अनुमान के अनुसार उक्त करारोपण के ढांचे से लगभग 47000 करोड़ के राजस्व का नुकसान होने की आशंका है, प्रभाव स्वरूप राज्यों के राजस्व में भी हानि होगी. लेकिन भविष्य में टैक्स ग्रोथ, कर का आधार और व्यापक अनुपालन तथा पारदर्शिता से घाटा पूरा होगा. व्यापार करने में आसानी बढ़ेगी.

भविष्य की राह- वन नेशन, वन टैक्स, वन दर अभी अधूरा - पेट्रोलियम उत्पाद (पेट्रोल, डीज़ल, गैस) अभी जीएसटी के बाहर. यदि इन्हें शामिल किया गया तभी एक देश, एक कर एक दर का सपना साकार होगा.

पर्युषण पर्व अर्थात् आत्मा के आनन्द का उत्सव

कैलाश मड़बैया
(पद्म श्री से अलंकृत प्रतिष्ठित चिंतक)

भाद्रपद शुक्ल 4 ऋषि पंचमी से चतुर्दशी तक प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व, दस व्रतों सहित मनाने की परम्परा आदि काल से चली आ रही है. यह मनाते तो जैन समाज के लोग हैं या कहें वही इन्हें मना पाते हैं जो कर्मणा जैन हैं. हैं तो वस्तुत: यह मानव जाति के पर्व क्योंकि व्यापक अर्थों में यह दस धर्म मानव जाति के आत्मधर्म हैं जिन्हें जैनत्व में दस लक्षण धर्म भी कहते है. दरअसल यह अन्य पर्वों से बहुत भिन्न हैं क्योंकि इनमें भोग नहीं त्याग ही कुछ न कुछ करके, मनाये जाते है. भोगते तो हम व्रत ही हैं. पर हम जानते हैं कि जब भी कुछ भोगा जाता है तो कुछ नियमों को भी पालना होता है. बस यही त्याग दरसल साधना या तप है जिसके कारण कतिपय लोग इसे कठिन मानकर निर्विघ्न मनाने के लिये, पूर्व से तैयारी करते हैं और कुछ इसे स्वाभाविक मान कर आनन्द से आयोजना में ' संलग्न हो जाते हैं. हॉ इस पर्व से तन का आनन्द नहीं, आत्मा का आनन्द आता है. इससे अध्यात्म के शब्दों में इसे आत्म कल्याण पर्व कहते हैं.

सच्चाई यह है कि यह दस लक्षण आत्मा के स्वाभाविक लक्षण या कहें दस धर्म होते ही है. मनाते हम इसलिये हैं कि वर्ष भर विभिन्न सांसारिक कार्यों मे लगे रहने से इन गुणों पर जाने अनजाने में कर्म-मैल चढ़ जाता है जिसे अलग करने के लिये कुछ त्याग का तप वैसे ही करना पड़ता है जैसे सोने को कुन्दन बनाने के लिये आग मे तपाना पड़ता है. आत्मा में ये दस धर्म-क्षमा, सत्य, शौच, मार्दव, आर्जव, तप, त्याग, संयम, ब्रम्हचर्य, अकिंचन-प्राकृतिक रुप से सहज होते हैं पर इनके कर्म मैल को दसों दिनों में बारी बारी से स्मरण मनन कर उघाड़ने / निखारने को ही पर्युषण कहते हैं. अर्थात् विकारों / कषायों को जलाने के दस व्रत बनाम दस लक्षर्ण पर्व हैं. पर्युषण का शाब्दिक अर्थ होता है-' परिआसमन्तात उष्यन्ते वहयन्ते पाप कर्माणि यस्मिन तत् पर्युषणम ' अर्थात् आत्मा में रत रहना और उसके बाह्य कर्म रुपी विकारों को दहन करना. सीधे सीधे कहें तो पर्युषण का सम्बन्ध पर्यावरण से है. आत्मिक पर्यावरण का प्रदूषण हटाना ही पर्युषण है. हों, पर यहाँ बाह्य नहीं आत्मा के अन्त:षण हटाने से यहाँ तात्पर्य है. परि उषन अर्थात् पर को दहन करना. पर्युषण पर्व की आयोजना में शुचिता तन और मन की रखने के लिये जिनालय जाकर आराधना के साथ एकासन / उपवास, स्वाध्याय, सामायिक करके संयम से तप तो करना आवश्यक होता ही है पर दस में एक एक धर्म को आचरण का अंग बनाना आवश्यक होता है. केवल भोजन एक समय करना पर्याप्त नहीं वरन् इन्द्रिय वासना की इच्छाओं का निरोध करना आवश्यक है. इस प्रकार से इच्छाओ के निरोध से तप कर धर्म धारण कर आत्मा को परम स्थिति में लाकर परम आत्मा बना मुक्ति पाना ही आत्मा का लक्ष्य होता है. तो आइये इन दसों घमाँ पर प्रथक प्रथक विचार करें.-

1-उत्तम क्षमा - दरअसल आत्मा का स्वाभाविक धर्म तो क्षमा ही है पर उसके अभाव से जो विभाव उपजता है वह कोध है. इससे कोध के विकार का आवरण हटाना है जिससे आत्मा का स्वाभाविक धर्म क्षमा ही सामने आये. उत्तम इसलिये जोड़ा जाता है कि इसमें सम्यग्यान और सम्यगदर्शन समाहित रहे. मतलब कोध अन्य कारणों से न आये तो क्षमा धर्म नहीं होगा पर सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन के साथ कोध का अभाव ही उत्तम क्षमा धर्म है. इससे कोध का अभाव ही क्षमा धर्म है. कोध, शास्त्रों में 4 प्रकार का बताया गया है-अनान्तनुबंधी, अप्रत्ख्यान, प्रत्याख्यान एवं संज्वलन. मूलत: आत्मा का अनुभव ही उत्तम क्षमा प्राप्ति का उपाय है. **2. उत्तम मार्दव**- मृदोभाव:मार्दवम् अर्थात् मान कषाय के अभाव में आई स्वभाव की मृदुता ही मार्दव धर्म है. कोध निंदा से आता है और मान प्रशंसा से आता है. मान एक प्रकार का 'कॉम्पलेक्स' है जिससे सरलता समाप्त हो जाती है. मान कुल का, रुप का, शक्ति का, ज्ञान का आदि सभी का करना कषाय है. हीनता का भाव भी कषाय है.

3. उत्तम आर्जव- ऋजोर्भाव: आर्जवम् अर्थात् सरलता ही आर्जव धर्म है. सरलता आत्मा का स्वभाव है जिसके अभाव में छल कपट उपजता है और व्यक्ति मायाचारी हो जाता है. कुटिलता और कपट के कारण वह सोचता कुछ है और करता कुछ है जिससे अपने भी उसका विश्वास नहीं करते. कहा गया है- 'कपट न कीजे कोय., चोरन के पुर न बसें.'. माया कषाय के अभाव के नहीं होने पर ही आर्जव धर्म होता है.

4. उत्तम शौच- शुर्चेभाव: शौचम् पवित्रता का नाम ही शुचिता है. लोभही शौच विरोधी मानी जाती है. कहा गया है- 'लोभ पाप का बाप बखाना' अर्थात् लोभ में आदमी सब कुछ करता है. लोभ केवल धन पैसे का नहीं वरन् बाह्य और अंतरंग दोनों प्रकार के लोभ घातक हैं, कषाय है. धन का, नाम का, यश का, ज्ञान का, धर्म का आदि किसी भी प्रकार का लोभ व्यक्ति से पाप कराता है. पाँचों इन्द्रियों के विषयों की एवं मानादि कषायों की पुर्ति का लोभ भी लोभ कषाय की श्रेणी में आता है.

5. उत्तम सत्य-सत्य केवल सच बोलने का धर्म नहीं है. वस्तु का स्वभाव ही सत् है. इसीलिये महात्मा गाँधी ईश्वर को सत्य नहीं वरन् सत्य ही ईश्वर है... कहते थे. जो वस्तु जैसी है वैसी ही जानना सत्य धर्म है. सत्य बोलना तो व्यवहार है. सत की खोज जारी रहना चाहिये 1 **6-उत्तम संयम**- 'संयमनं संयम:' अर्थात् संयमन को संयम कहते हैं. संयम सर्वाधिक उपयोगी धर्म है. कहा गसा है 'संयम रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं.' संयम हर धर्म के लिये आवश्यक है.' संयम 2 प्रकार से धारित होता है-एक प्राणी संयम और दूसरा इन्द्रिय संयम. छह काय के जीवों की रक्षारुप अहिंसा पंचेंन्दिय विषयों का संयम . **7. उत्तम तप**- इच्छाओं के निरोध को तप कहते हैं. यह अन्तरंग और बाह्य दो प्रकार का होता है. इनके भी छह छह प्रकार होते है. तप के महत्व के बारे में कहा गया है-' तप चाहें सुराय कर्म शिखर को बज है.' तप बिना तो सब धर्म अधूरे है.

8. उत्तम त्याग- त्याग और दान दोनों अलग अलग हैं. त्याग धर्म है जब कि दान पुण्य है. त्याग पर द्रव्यों का नहीं अपनी आत्मा में पर दव्यों के प्रति राग द्वेषादि का किया जाता है जब कि दान उस वस्तु का किया जाता है जो स्वंय की हो. त्याग अनुपयागी वस्तुओं का किया जाता है लबकि दान उपयोगी वस्तुओं का. ऐसे समझ लीजिये-दान चार प्रकार के बताये जाते है. अहार दान, औषधि दान, ज्ञान दान और अभय दान पर इन चारों का त्यांग नहीं किया जा सकता. त्याग में आत्म हित है जब कि दान में परहित होता है.

9. उत्तम आकिंचन्य- परिग्रह त्याग को ही आकिंचन्य कहते हैं. यह भी दो त्रकार के होते हैं- अन्तरंग परिग्रह ओर बाह्य परिग्रह. निग्रंथ उसी को कहते है जिसने अभ्यंतर और बाह्य दोनों प्रकार के परिग्रह को त्याग दिया हो. इसलिये मुनियों को निग्रंथ कहा जाता है. कहा गया है-' परिग्रह चौबीस भेद त्याग करें मुनिराज जी. आभ्यंतर परिबगह के 14 और आह्य परिग्रह के 10 भेद होते है. परिग्रह केवल धन का ही नहीं अन्य कषायों का भी त्याज्य होता है. यथा मान, लोभ आदि. धन का तो परिणमन भी किया जा सकता है पर अन्य कषायों का नहीं. परिग्रह त्याग ही बाकिंचन्य धर्म है.

11. उत्तम ब्रह्मचर्य-निज आत्मा में चरने या रमने का ही दूसरा नाम उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म है. इसी धर्म के पालन करने वाले आत्म लीन ही अतीन्द्रिय कहलाते है. आज केवल स्थूल अर्थो में बहह्मचर्य लिया जाता है वह भी केवल स्पेशन इन्द्रिय के विषय सेवन को. जबकि स्पर्शन इन्द्रिय के भी 8 विषय होते हैं ठण्डा, गर्म, नरम, कडा आदि .